महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राव तुलाराम की पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम में उद्बोधन

स्थान :- इंदौर दिनांक :- 23 सितम्बर, 2012 समय :- पूर्वान्ह 11बजे

शूरवीर और 1857 संघर्ष के महानायक और रेवाड़ी के राजा राव तुलाराम की पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी स्मृति में आयोजित इस समारोह में आकर मुझे बेहद खुशी हो रही है। मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

सन् 1857 के भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में रेवाड़ी हरियाणा के राजा राव तुलाराम ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। राव तुलाराम की अद्भुत संगठन शक्ति, उत्कृष्ट वीरता तथा अद्वितीय साहस के फलस्वरूप वर्तमान हरियाणा- दिल्ली से विदेशी शासकों को पराजित कर अपदस्थ सम्राट बहादुर शाह जफर को पुन: सत्तासीन कराया गया था। स्वयं अंग्रेज लेखक काये एवं मोलेसन ने राव तुलाराम की वीरता का वर्णन इन शब्दों में किया है – “इससे पहले शत्रु सेनाए (भारतीय क्रांतिकारी) इतने संगठित ढंग से कहीं नहीं लड़ी, ना तो उनमें कोई झिझक थी और न ही मरने से बचने का कोई भाव। इससे पहले ब्रिाटिश सेना ने शत्रु सेना का इतना जोरदार और संगठित आक्रमण नहीं झेला था।”

अफ्रीका से लौटने के बाद महात्मा गांधी के आव्हान पर हर वर्ग,समाज, धर्म और यहां तक कि महिलाएं और बच्चे भी स्वतंत्रता प्राप्ति की खातिर घरों से निकल पड़े और स्वतंत्रता संग्राम ने तेज गति पकड़ ली थी। । बापू के शांतिपूर्ण आंदोलन में साहित्यकार और पत्रकार यानी हर वर्ग के लोगों ने योगदान दिया। गणेश शंकर जी विद्यार्थी और माखनलाल जी चतुर्वेदी ने बिना साधन- सुविधाओं के निडर होकर ओजपूर्ण और आक्रामक लेखनी के जरिए देश को संघर्ष का रास्ता दिखाया था। आजादी की लड़ाई में पूरा देश एक था। पूरब से लेकर पश्चिम तक कन्या कुमारी से कश्मीर तक सब के मन में एक ही ज्योति जल रही थी वह थी भारत को आजादी दिलाने की ।

आजादी के संघर्ष में योगदान देने वाले सभी ज्ञात-अज्ञात शहीदों के प्रति हमारे दिलों में समान भाव से श्रद्धा और आदर तथा कृतज्ञता है। ऐसा नहीं है कि चर्चित न होने के कारण उनके योगदान को कम करके आंका जायेगा। ऐसे अल्प चर्चित रणबांकुरों के विषय में शोध होना चाहिए उनका योगदान एवं इतिहासकारों को दुनिया के सामने लाना चाहिए। ऐसे शूर-वीरों के क्षेत्र के लोग आगे आयें, नई पीढ़ी को उनके बारे में बताएं, उनकी बहादुरी के कारनामों पर चर्चा हो, उन पर कार्यक्रम हों।

मैं आज नौजवानों से कहना चाहता हूं कि बड़ी कुर्बानियों और संघर्ष के बाद हमने आजादी प्राप्त की है। मुझे खुशी है कि आजादी के बाद हमारे नेताओं ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के सपनों और आदर्शों पर चलते हुए देश को उनके सपनों के अनुरूप बनाने का प्रयास किया है। हम गर्व से कह सकते हैं कि उनकी प्रेरणा का ही नतीजा है कि कई क्षेत्रों में हम आत्मनिर्भर हैं और कई क्षेत्रों में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

यह कड़वा सच है कि कुछ लोगों को हमारे देश की एकता, अखंडता और विकास के पथ पर बढ़ते रहना रास नहीं आ रहा है। इसलिए वे हमारे देश के शांतिपूर्ण वातावरण में अलगाववाद,आतंकवाद और नक्सलवाद तथा हिंसा का जहर घोलकर देश को फिर गुलामी की जंजीरों में बांधना चाहते हैं। यहीं नहीं, साम्प्रदायिकता और भेदभाव को बढ़ावा देकर लोगों को आपस में लड़ाना चाहते हैं। लेकिन अभी तक वह अपने मकसद में बहुत हद तक नाकाम रहे हैं और यदि हम अपने सेनानियों की शहादतों को याद रखें तो वे कभी भी कामयाब नहीं हो सकेंगे।

हमें अपने स्वाधीनता संग्राम में अमूल्य योगदान देने वाले लोगों को सदैव याद रखना है। इस प्रकार के आयोजन युवा पीढ़ी में राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति की भावना जगाने का माध्यम हैं। इन आयोजनों से जहां स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की कुर्बानियों से प्रेरणा मिलेगी वहीं लोगों में संघर्ष और राष्ट्रभक्ति की भावना पैदा होगी। हमें एकजुट होकर बापू के बताये रास्ते पर चलते हुए देश में आतंकवाद, अलगाववाद और नक्सलवाद तथा हिंसा का मुकाबला करना है तथा एकता सद्भाव व भाई चारे की भावनाओं को मजबूत बनाना है।

आजादी की सुरक्षा बरकरार रखते हुए हमारे युवाओं को देश में भ्रष्टाचार, शोषण और अलगाववाद जैसी काली शक्तियों से स्वाधीनता सेनानियों की तरह ही जीवटता और दृढ़ संकल्प के साथ भी लड़ना होगा। मैं सभी स्वाधीनता सेनानियों से भी अनुरोध करूंगा कि वे स्वाधीनता

संग्राम के दिनों के संघर्ष की उसी भावना के अनुरूप नयी पीढ़ी को मार्गदशर्न दें। जिससे वे देश के नव निर्माण तथा अटूट एकता को सुदृढ़ करने में कामयाब हो सके।

जय हिन्द।